स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण बोध तथा सृजनशीलता में सहसम्बन्ध का अध्ययन

* रामधनी सिंह
** इंदु वर्मा

जलवायु परिवर्तन 21वीं सदी की सबसे जटिल चुनौतियों में से एक है। इसके प्रभाव से कोई देश अछूता नहीं है। जलवायु परिवर्तन से जुड़ी चुनौतियों से कोई देश अकेले नहीं निपट सकता। जलवायु परिवर्तन से होने वाले विकारों से हमें सजग रहने के लिए पर्यावरण बोध का अवश्य ज्ञान रहना चाहिए। जलवायु परिवर्तन का विकास आपदा और निर्धनता से निकट रूप से सम्बन्धित है। सतत् एवं समावेशी विकास में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत में इन मुद्दों के समाधान और निराकरण के लिए सृजनशील लोगों को आगे आने की आवश्यकता है जो हमारे सतत् एवं समावेशी विकास को गति देते हुए पर्यावरण में होने वाली विभीषिका को यथा सम्भव कम कर सकें। मानवीय आवश्यकताओं और आकांक्षाओं का संतोष विकास प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए। देश के अधिकतर लोगों की रोटी, कपड़ा, मकान और रोजगार की आवश्यकताएं पूरी नहीं हो पा रहीं हैं तथा देश में निर्धनता और असमानता व्याप्त है जो पर्यावरण और अन्य संकटों के प्रति सदैव संवेदनशील बना है। आज भारतवर्ष में संपोषणीय विकास की दरकार है जिससे सभी की बुनियादी जरूरतें पूरी हों और सभी को बेहतर जीवन की तमन्ना पूरा करने का अवसर मिल सके।

हमें पर्यावरण के प्रति जागरूक होना चाहिए, देश के संसद द्वारा भी समय–समय पर पर्यावरण से सम्बंधित अनेक कानून बनाये गये हैं जिनका हमें बोध होना चाहिए तथा यथासम्भव पालन करना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण और वन प्रबंधन के लिए उत्तरदायी भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने जल संरक्षण के लिए सन् 1974 ई0 में जल अधिनियम

* शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
** सहायक अध्यापिका, बेसिक शिक्षा विभाग, इलाहाबाद।

बनाया। सन् 1981 ई0 में वायु प्रदूषण एवं नियंत्रण अधिनियम पारित हुआ। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम सन् 1986 ई0 में बना जिसका उद्देश्य पर्यावरण का संरक्षण एवं सुधार था। इसमें पिछला संशोधन सन् 1991 ई0 में किया गया। संयुक्त राष्ट्र जैविक विविधता सम्मेलन सन् 1992 ई0 के उद्देश्यों को प्राप्त करने के गरज से सन् 2002 ई0 में जैविक विविधता अधिनियम पारित किया गया। इसका उद्देश्य जहॉ जैविक विविधता की रक्षा करना है वहीं उससे सम्बंधित ज्ञान का वैज्ञानिक और सुविचारित ढ़ंग से प्रसार करना भी है।

आज स्वच्छ, सुन्दर, समृद्ध एवं प्रदूषण मुक्त भारत के निर्माण में सभी देशवासियों के सक्रिय योगदान की आवश्यकता है। यह आवश्यकता यदि सृजनशील रूप में हो तो कम नुकसान में ज्यादा फायदा मिल सकता है। आज पर्यावरण बोध की जानकारी लगभग सभी नागरिकों की आवश्यकता है जिससे प्रत्येक गांव तथा नगर को प्रदूषण से मुक्त कर भावी भारत का निर्माण कर सकते हैं। सृजनशीलता मनुष्य के बौद्धिक विकास की उच्चतम उपलब्धि के रूप में मानी जाती है। सृजनशीलता के मुख्य अवयव संवेदनशीलता, लचीलापन, प्रवाह, विस्तारण, मौलिकता और समाज द्वारा अनुमोदन है।

राष्ट्रीय रोजगार योजना के अंतर्गत सड़कों तथा स्कूलों का निर्माण, तालाबों का जीर्णोद्धार, बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में नहरों तथा विशाल जलाशयों का निर्माण, रिक्त भूमि तथा उजड़े पर्वतों पर वन वृक्ष वनस्पति का विस्तार, रास्तों, नालियों, सामूहिक शौचालयों, खाद तथा कूड़ा–कचड़ा एकत्र करने के कक्षों तथा बायों–गैस सयंत्रों का निर्माण, सीवर प्रणाली इत्यादि परियोजनाओं का सृजनात्मक रूप से विकास किया जाय तो पर्यावरण प्रदूषण को यथासम्भव कम करते हुए अधिक से अधिक आर्थिक रूप से लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्ता पर्यावरण बोध और सृजनशीलता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन किया है तथा यह देखने का प्रयास किया है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण बोध तथा सृजनशीलता के मध्य

कैसा सहसम्बन्ध है ?

अध्ययन के उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये –

1. स्नातक स्तर के छात्रों में पर्यावरण बोध तथा सृजनशीलता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर की छात्राओं में पर्यावरण बोध तथा सृजनशीलता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण बोध तथा सृजनशीलता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा निम्नलिखित शोध परिकल्पनाएँ बनायी गयी –

1. स्नातक स्तर के छात्रों में पर्यावरण बोध तथा सृजनशीलता के मध्य सहसम्बन्ध नहीं है ।
2. स्नातक स्तर की छात्राओं में पर्यावरण बोध तथा सृजनशीलता के मध्य सहसम्बन्ध नहीं है ।
3. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण बोध तथा सृजनशीलता के मध्य सहसम्बन्ध नहीं है ।

अध्ययन की अनुसंधान प्रविधियाँ–

प्रस्तुत अध्ययन का प्रकार वर्णनात्मक शोध है तथा अध्ययन की विधि सर्वेक्षण विधि है। अध्ययन हेतु इलाहाबाद विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर के कला वर्ग के समस्त विद्यार्थियों को समष्टि के रूप में सम्मिलित किया गया है। न्यादर्श हेतु कला संकाय के 100 विद्यार्थियों (50 छात्रों तथा 50 छात्राओं) को लिया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा उपकरण के रूप में स्वनिर्मित पर्यावरण बोध मापनी तथा के. एस. मिश्र द्वारा निर्मित सृजनशीलता परीक्षण का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा परीक्षण उपकरणों से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर गुणनफल

आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया है।

परिणाम एवं विवेचना–

समूह	संख्या	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता स्तर
छात्र	50	0.346	सार्थक

प्रस्तुत तालिका–1 से प्रदर्शित है कि परिगणित सहसन्बम्ध गुणांक 0.346 है जो सारणी मान 0.05 सार्थकता स्तर पर 0.273 (df=50) से अधिक है अतः सार्थक है अर्थात् स्नातक स्तर के छात्रों में पर्यावरण बोध तथा सृजनशीलता के मध्य सहसम्बन्ध है। अतः स्नातक स्तर के छात्रों में पर्यावरण बोध तथा सृजनशीलता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है ।

समूह	संख्या	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
छात्रा	50	0.398	सार्थक

प्रस्तुत तालिका–2 से प्रदर्शित है कि परिगणित सहसंबंध गुणांक 0. 398 है जो सारणी मान 0.05 सार्थकता स्तर पर 0.273 (df=50) से अधिक है अतः सार्थक है। अर्थात् स्नातक स्तर के छात्राओं में पर्यावरण बोध तथा सृजनशीलता के मध्य सहसम्बन्ध है। अतः स्नातक स्तर की छात्राओं में पर्यावरण बोध तथा सृजनशीलता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है ।

समूह	संख्या	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता स्तर
विद्यार्थी	100	0.302	सार्थक

प्रस्तुत तालिका–3 से प्रदर्शित है कि परिगणित सहसम्बन्ध गुणांक 0.302 है जो सारणी मान 0.05 सार्थकता स्तर पर 0.195 (df=100) से अधिक है अतः सार्थक है। अर्थात् स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण बोध तथा सृजनशीलता के मध्य सहसम्बन्ध है। अतः स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण बोध तथा सृजनशीलता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है ।

निष्कर्ष–

उपरोक्त परिणाम के विवेचना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कला वर्ग के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण बोध तथा

सृजनशीलता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है अर्थात् विद्यार्थियों में पर्यावरण बोध को उनकी सृजनशील योग्यता धनात्मक रूप में प्रभावित करती है। अध्ययन से यह पाया गया कि सृजनशील विद्यार्थियों में पर्यावरण बोध अधिक होता है जिससे भविष्य में पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में सार्थक पहल की उम्मीद की जा सकती है, क्योंकि सृजनशीलता के घटक संवेदनशीलता, लचीलापन, प्रवाह, विस्तारण, मौलिकता और समाज द्वारा अनुमोदित है जो पर्यावरण के सापेक्ष आने वाली विविध समस्याओं को समझने एवं उनके निदान में प्रभावी हो सकते हैं।

सन्दर्भ –

1. कुरूक्षेत्र (2012). पर्यावरण विशेषांक; ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार; नई दिल्ली।
2. गुप्ता,एस0पी0 (2008). सांख्यिकीय विधियां. इलाहाबाद; शारदा पुस्तक भवन।
3. गुप्ता,एस0पी0 (2009). एडवांस साइकोलॉजी. इलाहाबाद; शारदा पुस्तक भवन।
4. परीक्षा मंथन (2013). पर्यावरण विशेषांक; इलाहाबाद।
5. प्रतियोगिता दपर्ण (2009). पर्यावरण प्रदूषण; आगरा।
6. लाल, डी0एस0 (2008). जलवायु विज्ञान. इलाहाबाद; शारदा पुस्तक भवन।
7. सिंह, सविन्द्र (2009).पर्यावरण भूगोल. इलाहाबाद; शारदा पुस्तक भवन।
8. सिंह,ए0के0(2011).मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां. पटना; मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।
9. योजना (जून 2002). सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार; नई दिल्ली।
10. योजना (मई 2012). सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार; नई दिल्ली।